

# ये मीठे-मीठे लोग

— प्रमोद ताम्बट

इन दिनों लोग बेहिसाब मीठे होने लग पड़े हैं। नख से लेकर शिख तक। क्यों न हो, पैदाइश से ही गप-गप मीठा खाना भारतीयों की वह छिछोरी आदत होती है, जिसे छोड़ने के लिए कहे जाने पर वे अपने प्राण दे सकते हैं। बात-बात में मिठाई खाने का बहाना ढूँढ निकालना और किलो-पसेरी मीठा चलते-फिरते खा जाना हम भारतीयों की जन्म-जात 'विलक्षण' प्रतिभाओं में से एक 'विशिष्ट' प्रतिभा होती है, सारी दुनिया के लोग जिसे फटी आँखों से देखते हैं।

जन्म हो, मृत्यु हो, तीज-त्यौहार, सगाई, शादी-ब्याह, तलाक हो, नई चीज खरीदी हो, बेची हो, बिना मिठाई के कोई आयोजन सम्पन्न होना सम्भव ही नहीं है। तब फिर एक सच्चे भारतीय का नख से लेकर शिख तक मीठा होना तो लाजमी है ही परंतु आधुनिक जीवन-चक्र की यह सप्रेम भेंट, जिसके किसी शरीर में आविर्भूत होने के बाद फिर वह शरीर चाहे गामा पहलवान का ही क्यों न हो, मीठा खाने के लायक ही नहीं रह जाता।

अब आप समझ गए होंगे कि मैं उस बिना जुर्म की सजा की बात कर रहा हूँ जिसे 'रक्त शर्करा' या 'डायबिटीज' कहा जाता है, और जो किसी भी कड़वे से कड़वे आदमी को भी मौका मिलते ही मीठा बना सकती है। एक बार कोई मीठा हो पड़ा, तो फिर मिठास कम नहीं होगी। पल-पल बढ़ती ही जाएगी।

बढ़ते-बढ़ते अंततः इतनी बढ़ जाएगी कि आप एकाध शक्कर फैक्ट्री के मालिक बनने का सपना आसानी से देख सकते हैं, बशर्त जल्दी ही शरीर से शक्कर को अलग कर बोरियों में भरने की कोई आधुनिकतम टेक्नोलॉजी बाजार में आ जाए।

डॉक्टरों के हथ्थे चढ़कर सफलतापूर्वक मीठा साबित होने के बाद (जो कि आजकल आमतौर पर चालीसी पार सभी, साबित होने में देर नहीं करते) जल्दी ही कोई भी व्यक्ति इस विषय पर डॉक्टरेट कर ले सकता है। अचूक नुस्खों पर एकाध ग्रंथ लिख सकता है, यहाँ तक कि सफल डायबिटीज कन्सल्टेंट भी बन सकता है, क्योंकि उसके मीठे होने की अधिकारिक खबर प्रसारित-प्रचारित होते ही स्वयंभू डॉक्टरों की फौज, (जो किसी भी 'ताजा मीठे आदमी के आसपास बड़ी तादाद में आ जुटती है, और तुरन्त दो कौड़ी की सलाहों का ढेर लगाकर आदमी को भारी आतंकित कर देती है) उसे इतनी सूचनाएँ एवं ज्ञान पहुँचा जाएगी कि इन मुफ्त की सलाहों-सूचनाओं का उपयोग कर मीठा व्यक्ति, आसानी से प्रकांड विद्वान घोषित हो सकता है।

मीठेपन के लिहाज से हरेक मीठे आदमी के संगी-साथी तो कई हो सकते हैं, परंतु उसका असली माई-बाप डॉक्टर होता है। इन दोनों का साथ दोनों में से किसी एक के मरने के बाद ही टूटता है। इस मामले



में दोनों चिरन्तन प्रेमी की तरह होते हैं। पैथालॉजी वाले जैसे उसके रिश्तेदार से हो जाते हैं। रोज वहाँ जाकर जाँच के लिए खून की भेंट जो चढ़ाना पड़ती है। घर की सी बात हो जाती है।

हर मीठे आदमी के लिए शरीर में शक्कर की मात्रा का चुम्मा-चुम्मा हिसाब-किताब रखना बही-खातों के हिसाब-किताब से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। कितनी घट गई, कितनी बढ़ गई, बैलेंस शीट रखना पड़ती है। घट जाए तो मीठा ढूँढते फिरो और बढ़ जाए तो इन्सुलिन। समय पर यदि यह दोनों चीजें नहीं मिलीं तो सारी शक्कर मय शरीर के पंच तत्व में विलीन हुई समझो।

डॉक्टर की ही मेहरबानी से रहस्य खुलता है कि आपने कितनी बोरी शक्कर अपने शरीर में छुपा कर रखी है। एक आदमी की, खून में शक्कर जमा रखने की अधिकतम सीमा 140 बोरी है। लेकिन कुछ खानदानी मीठे लोग 400-500 बोरी तक अपने छोटे से शरीर में छुपाए रखते हैं। वे देश की महान स्टॉकिस्ट कहे जा सकते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि मरीज आमतौर पर किसी गोदाम से ही दिखते हैं। सूजे हुए चेहर वाले मोटे, तौंदू जो उत्तरोत्तर 'सीकिया' होते जाते हैं। मैं जब भी किसी मोटे को देखता हूँ तो यही अन्दाज लगाने का प्रयास करता हूँ कि आखिर यह कितनी शक्कर की बोरियाँ लिए घूम रहा होगा। इसका अन्दाज लगाना ज्यादा कठिन नहीं है। आदमी बढ़िया दौड़-भाग रहा है, दबाकर बरफी-गुलाब जामुन खा रहा है, तो समझ लो ट्रक ठीक-ठाक लोडेड है, आराम से घाटी-पहाड़ सब चढ़ जायेगा। चलते-फिरते लड़खड़ाकर गिर-गिर पड़ता हो, आए दिन डॉक्टरों के पास बदहवास सा लेटा नजर आता हो, दवाओं-गोलियों से भी नाउम्मीद होकर बाबा रामदेव की शरण में पहुँच गया हो, तो समझलें क्षमता से कहीं ज्यादा शक्कर की बोरियाँ गोदाम में भरी पड़ी है।

सोचता हूँ जाँच के आधुनिक तरीके अगर ईजाद नहीं हुए होते तो क्या होता? डॉक्टर लोग मीठे लोगों की पहचान आखिर कैसे करते? मानव-मूत्र के सेम्पल को चीटियों के आस-पास छिड़क कर.....? कितनी चीटियाँ कितने समय में कितना सेम्पल चट कर जाती है, इसकी गणना कर? या मरीज को ऊपर से नीचे तक चटवा कर? चलो भई, कल भूखे पेट आना नहा-धोकर, चटवाई होगी। और फिर भरपूर

खाना खाकर डेढ़ घंटे बाद फिर आना, पोस्ट मी चटवाई होगी। स्वाद, मिठास की मात्रा के अनुसार इलाज तय किया जाता। मरीज कम मीठा है तो कोई खतरा नहीं। ज्यादा मीठा है तो परहेज शुरू। आदमी बहुत ज्यादा मीठा पाया गया तो परहेज, एक्सरसाइज, दवाओं के साथ-साथ ढेरों दुआएँ भी टेस्ट रिपोर्ट के साथ मुफ्त।

इस देश में परहेज एक ऐसा श्राप है कि पूछो मत। सारी दुनियाँ आपके सामने पकवान खायेगी और आप मुँह ताकते रहो। आपको दया की नजर से देखा जायेगा। मौका मिलते ही एक्सरसाइज वगैरह का भी तकाजा लगाया जायेगा। हर वह आदमी आपको तरह-तरह की एक्सरसाइजों की सलाहें देगा जो कम्बख्त खुद अपनी जगह से कभी हिलता-डुलता भी न होगा।

मेरा सोचना है कि खानदानी अति मीठों को तो चीटियों तक से दूर रहना चाहिए, कहीं हमला बोल पड़ी तो? गुड़ के डल्ले की तरह चन्द सेकण्डों में चट कर जाएँगी या शरीर की बोटी-बोटी नोच कर जमीन के नीचे अंधेरे बिल में ले जाएँगी, या कि पूरा शरीर ही खींच कर ले जा सकती है। यह चीटियों की श्रद्धा पर निर्भर करता है।

हमारे समाज में आदमी की औकात के हिसाब से मीठापन पाया जाता है। मेहनतकश मजदूर है, मीठेपन का नामोनिशान नहीं मिलेगा, सरकारी दफ्तर के बाबू-अफसर, बैठे-बैठे रोटी तोड़ने वाले हैं, मीठापन मिल सकता है। धन्नासेट, बड़े-बड़े व्यापारी, नेता-मंत्री, अफसर हों, शत-प्रतिशत मीठापन मिलेगा। जो जितना दबाकर खा रहा है वह उतना ही मीठा मिलेगा। और जो जितना मीठा उसके लिये स्वर्ग के द्वार उतने ही ज्यादा खुले हुए मिलेंगे। जब चाहो चले आओ, दरबान बिल्कुल नहीं रोकेगा।

आज के जमाने में जब हर एक आदमी दुनियाँ भर की कड़वाहट अपने भीतर भरे हुए है। रुखा, चिड़चिड़ा, सनकी होता चला जा रहा है, क्रूरता और धिनौनेपन की मिसालें पेश करने में, एक दूसरे से आगे निकलने के लिए बेकरार है। काश यह कामना की जा सकती है कि रक्त की यह मिठास थोड़ी-सी आदमी के मन-मस्तिष्क में भी पहुँच जाए, परंतु यह असम्भव है, इससे 'जान' जाने में जरा-सी भी देरी नहीं होगी। ●●●